# 19. १००८ श्री मल्लिनाथ जी

यक्ष
**वरुण**

चिन्ह
कलश

वर्ण
पीतवर्ण

यक्षिणी
**विजया**

## अर्घ

जल फल अरघ मिलाय गाय गुन पूजों भगति बढ़ाई।
शिव पद राज हेत हैं श्रीधर शरन गही मैं आई।।
रोग-दोष मद-मोह हरन को, तुम ही हो वर वीरा।
यातें शरन गही जगपतिजी, बेग हरो भव पीरा।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र शुक्ला-१

गर्भकल्याणक

मार्गशीर्ष शुक्ला-११

जन्मकल्याणक

मार्गशीर्ष शुक्ला-११

तपकल्याणक

पोष कृष्णा-२

केवलज्ञान कल्याणक

पिता: श्री कुंभराम

माता: प्रभावती

मोक्ष स्थान श्री सम्मेदशिखर जी

फाल्गुन शुक्ला-५

मोक्षकल्याणक